घनानंद काव्य का भाषा-शिल्प सौन्दर्य

डॉ. तृप्ता

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, अदिति महाविद्यालय, बवाना, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

रीतिकालीन काव्य की रीतिमुक्त काव्यधारा के जिन कवियों ने अपनी स्वानुभूत प्रेम-पीड़ा के स्वच्छंद अभिव्यक्ति प्रदान की, उनमें घनानंद का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इतिहास ग्रंथों में आनंद, आनंदघन और घनआनंद नामक तीन कवियों का उल्लेख मिलता है। आनंदघन नामक भी तीन व्यक्ति मिलते हैं। वृंदावन के आनंदघन, जैनधर्मी आनंदघन, नंदगाँव के आनंदघन। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र जी ने वृंदावन के आनंदघन को ही कवि घनानंद माना है।

आचार्य शुक्ल के अनुसार घनानंद का जन्म बुलंदशहर में संवत् 1746 माना है। कविवर जाति से कायस्थ थे। वह दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह रंगीले के दरबार में मीरमुंशी थे। इनको 'सुजान' नामक वेश्या से एकतरफा प्रेम था। एक बार बादशाह ने इन्हें संगीत सुनाने को कहा, लेकिन घनानंद ने मना कर दिया तब दरबारियों ने बताया कि ये सुजान के कहे बिना नहीं गाएँगे। बादशाह ने सुजान को बुलवाया, तब इन्होंने बादशाह की ओर पीठ कर सुजान की तरफ मुँह करके गाना सुना दिया। प्रभावी संगीत से तो बादशाह प्रसन्न हुए, किन्तु इनकी अशिष्टता के कारण इन्हें निष्कासन का आदेश दे दिया। कवि ने प्रेमिका से साथ चलने का आग्रह किया तो उन्होंने मना कर दिया। विरक्त होकर कवि ने वृंदावन जाकर निम्बार्क संप्रदाय में दीक्षा ग्रहण कर ली।

जनश्रुति है कि सन् 1739 में नादिरशाह के सैनिकों ने इनसे 'जर जर जर' कहकर धन माँगा, किन्तु इन्होंने 'रज रज रज' कहकर उन पर तीन मुट्ठी धूल फेंक दी। क्रोधित सैनिकों ने इनका वध कर दिया।

प्रस्तुत लेख में हम रीतिमुक्त कवि की भाषिक विशेषताओं पर विचार करेंगे। घनानंद काव्य की भाषा एवं शिल्प उनकी सहज अनुभूति का ही सुंदर उदाहरण है। कवि ने भाषा में लक्षणा रूप का ही प्रचुर प्रयोग किया है। घनानंद की भाषा-शैली में इनका निजी-वैशिष्ट्य दर्शनीय है। इनका काव्य मूलतः ब्रजभाषा में लिखा गया है। अपने युग-परिवेश के प्रभाव से भी इनकी भाषा लबरेज है। कवि के काव्य में काव्यरूप की दृष्टि से मुक्तक रचना विधान ही मिलता है। घनानंद की वर्णनात्मक काव्य रचनाओं में प्रबंध काव्य के समस्त तत्व विद्यमान हैं। 'गिरि पूजन', 'रंग बधाई' रचनाएँ मुक्तक युक्त प्रबंध रचनाएँ हैं तथा कवि के काव्य में रेखता काव्य रूप में दिखलाई पड़ता है। छंदो की दृष्टि से दोहा, सवैया, घनाक्षरी आदि छंदों का प्रयोग किया गया है। कवि के भक्ति पदों में अधिकतर दोहा, सोरठा, छप्पय छंदों का प्रयोग दिखलाई पड़ता है। प्रेम के पदों में कवित्त, सवैया छंदों का प्रचुर प्रयोग किया गया है। भाषा में संगीतात्मकता का गुण विद्यमान है। चूँकि कवि संगीत विशारद थे। इसलिए इनकी पदावली में अनेक पद विभिन्न राग-रागिनियों में आधारित हैं। संगीत के जुड़ाव से इनकी भाषा अधिक जीवन्त और सम्प्रेषणीय बन गई है।

'भाषा काव्य अभिव्यक्ति पक्ष पर स्वयं कवि घनानंद का मानना है कि कविता हृदय की वस्तु है, हृदय से उत्पन्न होती है और रचयिता के व्यक्तित्व का अंग होती है। जो भीतर होना चाहिए वही बाहर होना चाहिए-

लोग हैं लागि कवित्त बनावत, मोहि मेरे कवित्त बनावत।

इस तरह उन्होंने लोक की कविता से अपनी कविता के प्रवृत्ति-भेद को बताया है। इस प्रकार कवि का काव्य विषयक दृष्टिकोण स्पष्ट, उदात्त और सुग्राह्य है। वह मानते हैं कि बुद्धि का जो व्यवसायी है, उससे कविता का कोई सरोकार नहीं। हृदय काव्य का प्राणतत्व है। रीझ ही काव्य-क्षेत्र में पटरानी है, बुद्धि और कल्पना उनकी दासी मात्र। जहाँ तक कवि की भाषा का सवाल है, कवि ने साहित्यिक ब्रज भाषा का प्रयोग किया है। ब्रजनाथ ने उन्हें 'ब्रजभाषा प्रवीन' माना है। इनकी रचनाओं में ब्रजभाषा में ठेठ लोकरूप मिलता है। उदाहरणतः भभक (ज्वाला), चुहल (विनोद), आबरो (व्याकुल), हेली (खेल करने वाले), तेह (क्रोध) आदि इन शब्दों द्वारा भाषा को समर्थ रूप प्रदान किया है। कवि ने कुछ नए और अप्रचलित शब्द प्रयोग भी अपनी भाषा में किये हैं। जैसे- उदा-सवादिली (स्वादिष्ट), रयौ (लीन हो गया), चाड़ (उत्कंठा), गेहर (गहराई) वगैरह-वगैरह। घनानंदजी को भाषा की नाड़ी की ऐसी सुघड़ पहचान थी कि उनके काव्य में शब्दों को भाव-छंद के अनुसार निश्चित रूझान प्रदान किया हुआ है। इसलिए शब्द इधर-उधर हिलाये नहीं जा सकते। कवि ने गहरी भाव-व्यंजना वाले शब्दों के खेल द्वारा सुन्दर काव्य रचनाएँ की है। कुछ शब्दों को निश्चित रूप में वे बार-बार प्रयुक्त करते हैं। मसलन स्नेह, मोहो, गुन बाँधना, जान, सुजान, खुलना, उघरना, रीझना, बुझना, आनंद आनंदघन आदि।

घनानंद ने सुजान सौन्दर्य-वर्णन में बड़े ही अनूठे सौन्दर्य प्रयोग किये हैं, उदाहरणतः आँखिन के उर, दृग-हाथिनि, कृपा कान, मधि नैन, फिरी खग, रावरे रूप की दोही, रीझिके पानि, दगनि-दगी, आंखों का हृदय लछमी धीर, गिलै आदि।

घनानंद द्वारा भाषा के नए प्रयोग के विधान से उनकी असाधारण भाषिक क्षमता एवम् सामर्थ्य का पता चलता है। भाषा के जिन नए पथों पर कविवर गए हैं, उन भाषिक पंथों का अनुसंधान अभी भी शेष है। भाषा में शब्दों का लोच लगिये रहै, अनोखिये प्रयोगों द्वारा शब्दों को खींचकर उनमें नया अर्थ प्रतिष्ठित किया है। उक्ति सौन्दर्य इनकी असाधारण भाषा का विशेष गुण है।

(क) मति दौरि थकी न लहै ठिक ठौर, अमोही के मोह मिठास ठगी।

I.Q.A.C. Cordinator Aditi Mahavidyala Bawana, Delhi-110039
NAAC Cordinator Aditi Mahavidyala Bawana, Delhi-110039

JIGYASA, ISSN 0974-7648, Vol. 13, No. III, March 2019

- डॉ. राधाकृष्णन् के गीताभाष्य में ब्रह्म की अवधारणा : एक अवलोकन — 169-173
  डॉ. रंजना त्रिपाठी, (सहायक व्याख्याता), स्नातकोत्तर दर्शन विभाग, सिदो कान्हो मुर्मू विश्वविद्यालय, दुमका, (झारखंड)
- घरेलू महिला कामगारों की दशा वैदिक काल से वर्तमान काल तक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन — 174-179
  सुनील कुमार सिंह, शोध छात्र (समाजशास्त्र), समाज विज्ञान संस्थान (डा० भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा)
  प्रो. दीपमाला श्रीवास्तव, समाजशास्त्र विभाग, समाज विज्ञान संस्थान (डा० भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा)
- रामधारी सिंह दिनकर कृत 'रश्मिरथी' आधुनिक समसामयिक संदर्भो में एक पुनर्दृष्टि — 180-187
  डॉ. तृप्ता, एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, अदिति महाविद्यालय, बवाना, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- बाल सृजन शक्ति के पोषक गिजुभाई बधेका — 188-191
  प्रियंका सिंह, शोध छात्रा, साई नाथ युनिर्वसिटी, रॉची, झारखण्ड
- माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालय एवं जवाहर नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन — 192-205
  रीना पाटील, सहायक प्राध्यापक, ज्ञानोदय शिक्षा महाविद्यालय, इन्दौर, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर
- महिलाओं की राजनीत में भागीदारी एवं चुनौतियां (बिहार के संदर्भ में) — 206-210
  सिता कुमारी, शोधार्थी नारी अध्ययन विभाग मगध विश्वविद्यालय, बोधगया
- मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन तथा आंचलिकता की झलक — 211-216
  मृत्युंजय तिवारी, शोध छात्र, हिन्दी विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

NAAC Cordinator Aditi Mahavidyala Bawana, Delhi-110039

I.Q.A.C. Cordinator Aditi Mahavidyala Bawana, Delhi-110039

रामधारी सिंह दिनकर कृत 'रश्मिरथी' आधुनिक समसामयिक संदर्भों में एक पुनर्दृष्टि

डॉ. तृप्ता *

सन् 1952 में दिनकर कृत 'रश्मिरथी' प्रबंधकाव्य आज के समसामयिक चिंतन का काव्य है। राष्ट्रकवि ने इस कृति में प्रासंगिक, सांस्कृतिक, वैचारिक चिंताओं को उद्धृत किया है। हालाँकि महाभारत प्रसंगों पर आधारित कथानक की समस्याएँ वही पुरानी हैं, किन्तु इन समस्याओं के समाधान को नए कोणों से हल किए जाने की संभावनाओं की तलाश जारी है। सात सर्गों में बंटी हुई इस काव्यकृति का नायक एक आम इंसान दबंग दानवीर कर्ण है। कर्ण का चरित्र एक आधुनिक युवा के रूप में नई बहस व प्रश्नों के नए आयाम खोलता है। यों रश्मिरथी को हम 'आम-इंसान' के संघर्षों की लड़ाई अथवा अवैध-संतान का चुनौतीपूर्ण सफर भी कह सकते हैं।

कृति के कथानक से हम सभी रू-ब-रू हैं। महाभारत में वर्णित कर्ण जन्म तथा प्रसंग से लेकर तमाम कौरव-पांडवों के छल-कपट भरी राजनीति और अंततः कर्ण द्वारा मौत के समक्ष सरेंडर करना, हारकर भी जीत जाना, मानवीयता और सामाजिक, सांस्कृतिक नैतिक मूल्यों की हत्या और पुनर्स्थापना का मिला-जुला ताना-बाना हमारे समक्ष परोसती है। आधुनिक संदर्भों में यह कृति हम सभी के भीतर प्रश्नाकुलता उत्पन्न करती है। राष्ट्रकवि ने वर्षों पूर्व जिन समस्याओं का पूर्वाभास कर लिया था, वही सारे सवाल हमारे ज़ेहन में आज भी ज़स के तस बने हुए हैं। उन सारे प्रश्नों की गुत्थियाँ खोलना-सुलझाना ही शायद आज मेरे पुनर्पाठ का उद्देश्य होगा।

सर्वप्रथम शीर्षक 'रश्मिरथी' पर जब हम अवलोकन करते हैं तो पाते हैं कि वह कर्ण के नाम का पर्यायवाची है। रश्मिरथी अर्थात् (कर्ण) पिता सूर्य का पुत्र होने के नाते वह उनका अंश किरण ही हुआ। रथ उसका वाहन है जो कि सदैव सत्यपथ, दानशीलता और मानवीय गुणों का वरण करता है। 'रथ' पुण्य कर्मों के शुभ्रधवल उज्ज्वल वर्णों से निर्मित है, इसलिए विशेषण रश्मिरथी अर्थात् किरणों के वाहन (रथ) पर सवार सूर्यपुत्र कर्ण के लिए अत्युत्तम नामकरण प्रतीत होता है तथा कृति की सार्थकता को प्रशंसनीय एवं सार्थक बनाता है। मुझे लगता है कि स्वयं 'दिनकर' उपनाम उनके सूर्य (ज्ञान के प्रकाश) के प्रति अति प्रेम की मंशा को ही दर्शाता है। संपूर्ण कृति उनके नए विचार मंथन के निम्न बिन्दुओं पर फोकस है। 'कर्ण जन्म' का पहला सवाल जो दिनकर जी सुंदर शब्दों में वर्णित करते हैं–

* एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, अदिति महाविद्यालय, बवाना, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

Principal, Aditi Mahavidyalaya (University of Delhi) Bawana, Delhi-110039
I.C.A.C. Coordinator Aditi Mahavidyala Bawana, Delhi-110039

जिसके पिता सूर्य थे माता कुंती सती कुमारी,
उसका पलना हुआ धार पर बहती हुई पिटारी।
सूतवंश में पला, चखा भी नहीं जननि का क्षीर,
निकला कर्ण सभी युवकों में तब भी अद्भुत वीर।।

अर्थात सूर्य पुत्र के रूप में जन्म लेकर भी उसका पालन-पोषण शूद्र वंश में हुआ। किन्तु तब भी वह वीरता की मिसाल बन गया। जन्म-परिचय देकर कवि एक पंक्ति में ही सारा कर्ण-व्यक्तित्व-सार व्यक्त कर देता है।

'वीर खींच कर ही रहते हैं इतिहासों में लीक।

अर्थात् वीर कर्ण ने अपने व्यक्तित्व कर्म, चरित्र द्वारा निश्चित ही अभूतपूर्व इतिहास की परंपरा रची। यह पूर्णतः सत्यकथन है। तभी तो कर्ण की दानशीलता, वीरता का जज़्बा आज भी युवाओं के लिए उतना ही प्रासंगिक है।

कर्ण का जन्म-परिचय देने के पश्चात् सर्वप्रथम दिनकर ने सार्वजनिक रण-कौशल में उसकी उपस्थिति अचानक से दर्ज करवाकर यह साबित किया कि यह आम इंसान कितना वीर एवं गुणी है इस तथ्य का ज्ञान तमाम राजाओं और आम प्रजा को अवश्य होना ही चाहिए। कर्ण द्वारा अचानक आम सभा में धनुर्विद्या का प्रदर्शन दिखाना एक सोची-समझी रणनीति के तहत ही संभव हुआ, क्योंकि इस प्रदर्शन को देखने के बाद ही तमाम सवाल और खलबली पांडवों में दिखलाई पड़ती है।

'इस प्रकार कह लगा दिखाने कर्ण कलाएं रण की,
सभा स्तब्ध रह गयी, गयी रह आंख टंगी जन-जन की।

इस धर्नुवीर का रण-कौशल देखकर तमाम राजवंशी सकते में पड़ जाते हैं।

राजवंश के नेताओं पर पड़ी विपद अति भारी।

यहीं से आरंभ होता है सभी सवालों-जवाबों का क्रम, क्योंकि तभी कृपाचार्य इसकी काट ढूँढ़कर उस पर प्रश्न दाग देते हैं–

नामधाम कुछ कहो, बताओ कि तुम जाति हो कौन?

आज भी यह प्रश्न ज्यों का त्यों बना हुआ है जब भी हमें किसी गुणी व्यक्ति को नीचा दिखाना होता है तो हम अपनी कुंठित मानसिकता को संतुष्ट करने के लिए 'धर्म जाति' संबंधी विमर्शों के सवालों के कटघरे में उसे उलझा देना चाहते हैं। जाति और धर्म का तमगा देखकर ही पूर्वग्रह मुक्त होते हैं। अन्यथा खामियों का रास्ता अख्तियार कर लेते हैं। लेकिन मजेदार बात यह है कि युवा नायक कर्ण द्वारा दिनकर जाति का खंडन करवाकर एक नई परिभाषा गढ़ते हैं–

मैं क्या जानूं जाति? जाति है ये मेरे भुजदंड।

तभी वह गर्व की स्वीकारोक्ति के साथ-साथ पांडव पिता पर एक प्रश्नचिह्न लगाता है।